

अन्तर-बाहर द्वादश तप से, जो कर्म-कालिमा दहते।
 उपसर्ग परीषह-कृत बाधा, जो साम्य-भाव से सहते।
 जो शुद्ध-अतीन्द्रिय आनन्द-रस का, लेते स्वाद घनेरा ॥२॥
 जो दर्शन-ज्ञान-चरित्र-वीर्य-तप, आचारों के धारी।
 जो मन-वच-तन का आलम्बन तज, निज चैतन्य विहारी ॥
 शाश्वत सुख दर्शन-ज्ञान-चरण में, करते सदा बसेरा ॥३॥
 नित समता स्तुति वन्दन अरु, स्वाध्याय सदा जो करते।
 प्रतिक्रमण और प्रति-आख्यान कर, सब पापों को हरते ॥
 चैतन्यराज की अनुपम निधियाँ, जिनमें करें बसेरा ॥४॥

(१४)

होली खेलें मुनिराज शिखर वन में, रे अकेले वन में, मधुवन में।
 मधुवन में आज मची रे होली, मधुवन में ॥टेक॥
 चैतन्य-गुफा में मुनिवर बसते, अनन्त गुणों में केली करते।
 एक ही ध्यान रमायो वन में, मधुवन में ॥होली. ॥१॥
 ध्रुवधाम ध्येय की धूनी लगाई, ध्यान की धधकती अग्नि जलाई।
 विभाव का ईंधन जलायें वन में, मधुवन में ॥होली. ॥२॥
 अक्षय घट भरपूर हमारा, अन्दर बहती अमृत धारा।
 पतली धार न भाई मन में, मधुवन में ॥होली. ॥३॥
 हमें तो पूर्ण दशा ही चाहिये, सादि-अनंत का आनंद लहिये।
 निर्मल भावना भाई वन में, मधुवन में ॥होली. ॥४॥
 पिता झलक ज्यों पुत्र में दिखती, जिनेन्द्र झलक मुनिराज चमकती।
 श्रेणी माँड़ी पलक छिन में, मधुवन में ॥होली. ॥५॥
 नेमिनाथ गिरनार पे देखो, शत्रुंजय पर पाण्डव देखो।
 केवलज्ञान लियो है छिन में, मधुवन में ॥होली. ॥६॥
 बार-बार वन्दन हम करते, शीश चरण में उनके धरते।
 भव से पार लगाये वन में, मधुवन में ॥होली. ॥७॥
